International Journal of Information Movement Vol.3 Issue IX (January 2019)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 9-14

संगीत कला एवं धर्म

डॉ0 रीटा दत्ता
प्रवक्ता संगीत वादन
एस0 एन0 आर0 एल0,
जयराम गर्ल्ज कॉलेज, लोहार माजरा, कुरूक्षेत्र ।

हमारा संगीत एक भावनात्मक एकता भी है और आध्यात्मिक इकाई भी। साहित्य ज्ञान तथा कलाओं की दृष्टि से प्राचीन भारतीय वाड्.मय ने संसार के सम्मुख एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जिससे विश्व में भारत संस्कृति साहित्य तथा कलाओं की समृद्वि की दृष्टि से हमेशा अग्रनीय रहा। हमारी यही सांस्कृतिक विरासत है।

भारतवर्ष के कण में ऐसा आकर्षण है कि विश्व के अनेक धर्म तथा जातियां प्रारम्भ से ही इसकी ओर आकर्षित होती रही है। हमारी संस्कृति में एक विशेषता है कि उसमें समुद्र की भांति सोखने की असीम शक्ति है। भारतीय आर्यों ने संगीत को धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष चारों पुरूषार्थों की प्राप्ति का सर्वोतम उपाय माना है। भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक भावना के आधार पर ही भारत में आए अन्य धर्मो तथा जातियों ने अपने अस्तित्व की रक्षा की।

संगीत की महिमा अनन्त है। जिसे संगीत का वरदान प्राप्त है संगीत द्वारा साध्य तथा साधक दोनों ही सुख प्राप्त करते है संगीत मानव मात्र की आत्मा का ऐसा भोजन है जिसके अभाव में मानवाचित गुण फल फूल नहीं सकते। संगीत में ईश्वर से साक्षात्कार कराने की असीम शक्ति निहित है जिसका अनुभव हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और योगियों ने किया।

हमारा संगीत एक भावनात्मक एकता भी है और आध्यात्मिक इकाई भी। इसमें न केवल भारत अपित समस्त विश्व में एक प्रकार की भावानुभूति को व्यक्त करने वाली ध्वनियों में एकता साम्य एवं सानुकूलता के दर्शन होते है संगीत की महिमा अनन्त है जिसे संगीत का वरदान प्राप्त है वह इसकी महिमा से अभिभूत रहा है। संगीत विभिन्न धर्मों के भक्ति मार्गों को अंतिम लक्ष्य की ओर जाने में सहायक हैं। संगीत द्वारा साध्य तथा साधक दोनों ही परम सुख प्राप्त करते है जहां एक ओर भारतीय परम्परा में परमानन्द की प्राप्ति हेतु संगीत का प्रयोग दार्शनिक योगियों और भक्तों ने किया है दूसरी ओर जन साधारण ने भी उसको अपने धार्मिक तथा सामाजिक उत्सवों तथा व्यक्तिगत मनोरजन का साधन बनाया।

मानव जीवन के सम्पूर्ण विकास हेतु कलाओं के साथ संगीत का ज्ञान भी बहुत आवश्यक है संगीत आत्मा की सात्विक खुराक है। नाद की उत्पति सृष्टि के साथ–2 मानी जाती है संगीत के सात विशिष्ट स्वर स रे ग म प ध नी न केवल हमारे शारीरिक तंत्रिकाओं को प्रभावित करते है बल्कि पाशविक वृतियों का दमन भी करते है।

पर्यावरण, प्रकृति व संगीत का आपस में गुढ़ सम्बन्ध है 200 ईसा पूर्व से 200 इसवीं सन् के समय में भरत मुनि द्वारा संकलित नाटयशास्त्र में ध्वनि की उत्पति के आधार पर संगीत वाद्यों को 4 मुख्य वर्गो में विभाजित किया गया है।

1 तत् वाद्य या तंतु वाद्य

इस श्रेणी के वाद्यों में तारों के द्वारा स्वरों की उत्पति होती है इनके भी दो प्रकार है 1 तत् वाद्य 2 वितत् वाद्य। तत वाद्यों की श्रेणी मे तार के वे साज आते है जिन्हें मिजराव या अन्य किसी टंकोर द्वारा बजाया जाता है जैसे वीणा, सितार, सरोद, तानपूरा, इकतार, दुतारा इत्यादि। वितत् वाद्यों में गज की सहायता से जैसे इसराज, सांरगी, वायलिन इत्यादि।

2 सुषिर वाद्य या वायु वाद्य

इस श्रेणी में फूॅक हवा से बजने वाले वाद्य जैसे बासुरी, हारमोनियम, कलारनेट, शहनाई, बीन, शंख इत्यादि।

3 अवनद्व वाद्य और चमडे के वाद्य

ताल वाद्य, झिल्ली के कम्पन वाले वाद्ययंत्र जैसे मृंदग, तबला ढोलक खंजरो, नगाडा, डमरू, ठोल इत्यादि।

4 धन वाद्य या आधात वाद्य

ठोस वाद्य जिन्हें समस्वर स्तर में करने की आवश्यकता नहीं होती। ये वाद्यय चोट या आधात से स्वर उत्पन्न करते है जैसे जल तंरग मंजीरा झांझ करताल धटा तरग पियानो इत्यादि।

ये सब वाद्य लकडी, चर्म तारों से निर्मित है ये सब इसी प्रकृति में उत्पन्न हुए है। इसी प्रकृति की देनों से जब व्यक्ति स्वर सजाकर वाद्यय यंत्रो से निकालते है तो हम कहेगे कि वो वाद्य यन्त्र नहीं बोलते बल्कि वाद्य यन्त्रों के रूप में प्रकृति स्वयं बोलती है जो मनुष्य को आनंद की ओर ले जाकर उस परमानंद तक पहुचा देती है।

5 क्ला एवं कला के तत्वों में संगीत

कला का मनुष्य के जीवन मे धनिष्ट सम्बन्ध होता है मनुष्य को अपना जीवन सक्रिय तथा गतिमान बनाए रखने के लिए जिस प्रकार भोजन वस्त्रों आवास इत्यादि भौतिक पदार्थो की अपेक्षा रहती है उसी प्रकार उसे क्रम करने के लिए कलाओं के सहयोग की आवष्यकता होती है कलात्मक जीवन ही सही जीवन है अन्यथा यह मानव जीवन पशु के समान हो जाता है।

कला शब्द की उत्पति संस्कृत की कल घातु से मानी जाती है इसका अर्थ शब्द करना उत्पन्न करना या कुछ नवीन रचना करना माना गया है। कला शब्द की सिद्वि ला धातु से हुई है। कला का अर्थ आनन्द दायक स्थिति अर्थात आनन्द देने वाला और ऐन्द्रिय सुख का साधन माना है कला शब्द का अर्थ एक ऐसी कृति है जो मानवीय क्रिया से उत्पन्न होती है कुछ विद्वान कला शब्द की व्युत्पति क धातु से मानते है एक अन्य मत के अनुसार कला का अर्थ सुन्दर मधुर कोमल स्थायी प्रेरणादायक सुख देने वाला एंव कल्याणकारी स्वरूप प्रकट करना या अनुभव करना ही कला है।

6 कला एवं प्राचीन इतिहास

भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार कला शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ। इसके उपरान्त कला शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता रहा है ब्रहाण ग्रन्थों तथा चारों वेदों की सहिताओं में कला शब्द का विभिन्न स्थलों पर प्रयोग हुआ। भरत कृत नाट्य शास्त्र में कला शब्द का शिल्प के रूप में उल्लेख हुआ है इस काल मे कलाओं के

स्पष्ट संकेत नही मिलते। ईश्वर की कलात्मक कृति प्रकृति के विविध रूपों से प्रेरित होकर मानव ने विभिन्न कलाओं का निर्माण किया।

कला शब्द की व्युत्पति यूनानी भाषा में शब्द क्लोस से भावी जाती है। जर्मन भाषा में आर्ट को कुन्स्त शब्द का प्रयोग माना जाता है इसका अर्थ कार्य कुषलता व्यक्त करता है फाईन आर्ट कहते है अग्रेजी में ललित कला को। इसका अर्थ सुन्दरता की व्यक्तावस्था की अभिव्यक्ति है।

जिस प्रकार ईश्वर की कला प्रकृति है उसी प्रकार मनुष्य की कला है कला इसी कारण प्रकृति तथा कला का गठबंधन सदैव बना है। कला प्रकृति की उपासक रही है कला विषय में अनेक देशी तथा विदशी विद्वानें ने अपने मत प्रकट करते हुए परिभाषाएं दी है। हर्बर्ट रीड के अनुसार आट उन सब वस्तुओं में से है जिन्हें हम अपनी इन्द्रियों की तृप्ति हेतु प्रयोग करते है

7 कोच के अनुसार – कला सहानानुभूति है और उसमें अभिव्यक्ति ही कला है टकवेल की मान्यता है कि जिस प्रकार बह्म की आत्मा का व्यक्ति करण यह सृष्टि है इसी प्रकार कलाधार की आत्मा उसकी कलाकृति से अभिव्यक्ति पाती है।

प्लेटो के अनुसार कला प्रकृति का अनुसरण करती है अरस्तु के अनुसार कला प्रकृति है और उसमें कल्पना भी है मार्क्स ने कला को भौतिकवादी मानते हुए कहा है कि कलाकार की चेतना सामजिक जीवन की ही देन होती है भारतीय मनिषियों तथा विद्वानों ने भी भिन्न–2 परिभाषाएं दी है राष्ट्रीयता महात्मा गांधी के विचारानुसार एक अनुभूति को दूसरे तक पहुॅचाना ही कला है।

राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त के अनुसार कला से जीवन का महत्व है।

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल के शब्दों में विश्व की अनन्त सृष्टि की तरह कला भी आनन्द का प्रकाश है।

जयंशकर प्रसाद के अनुसार कला मानव की चिरंसगिनी है उमेष जोषी का कथन है कि उमंग जीवन का श्रृगार है दशरथ जैन जी ने कला को एक बहुआयामी धटना कहा है इसका सम्बंध सुन्दर से नहीं अपितु सत्य और शिव से भी है।

उपरोक्त भाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मानव सम्भावत जिज्ञासु है उसकी इस जिज्ञासा ने उसके मस्तिष्क का विकास किय और उसे अन्य सभी प्राणियों से श्रेष्ठ माना। हमाारी आज की सभ्यता संस्कृति समाज **दर्शन** सभी कलाएं इसी जिज्ञासा का फल है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि कला मानव संस्कृति के विकास की उपज है कला से निर्मित आलौकिक तथा आनन्द की प्राप्ति ही कला का उदेद्य है।

8 कला विभाजन

कला का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है अनेक विचारको ने भी समय समय पर कला तत्व की व्याख्या अपने ढ़ग से की है इन विचारकों ने कला तीन प्रकार वर्गीकृत किया है

कला का आध्यात्मिक स्वरूप

कला का रूपवादी स्वरूप

कला का भावनात्मक स्वरूप

मनोविज्ञान मानव के उदगारों को व्यक्त करने का माध्यम है कला का विभाजन अरस्तु ने तीन प्रकार से किया है।

आचरण सम्बधी कलाएं

ललित कलाएं

उदार कलाएं

8.1 आचरण सम्बन्धी कलाए – इस वर्ग की कलाएं मानव को सदैव आचरण की ओर अग्रसर करती है इनमें शब्द वाक शक्ति से सम्बन्धी साहित्य कविता संगीत तथा धर्म परक अथवा अध्यात्म द्वारा सम्बन्धित किया जाता है।

8.2 ललित कलाएं – इस वर्ग के अन्तर्गत उपयोगी एवं सौन्दर्य सम्बन्धित कलाएं आती है। ललित कला सही अर्थो में कला है जो अपनी प्रातती के माध्यम से मानव की सौन्दर्य चेतना का सन्तुष्ट परिष्कृत और समृद्व करती है।

8.3 उदार कलाएं – इस वर्ग के अन्तर्गत ऐसी कलाएं आती है जिसका विषय क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है उदार कला ऐसी सृष्टि है जो मानव की सौन्दर्य चेतना को सन्तुष्ट परिष्कृत और समृद्व करती है। हीगेल ने कलाओं का विभाजन इस प्रकार किया है।

1 प्रतीकवादी कलाएं

2 राष्ट्रीय कलाएं

3 रोमानी कलाएं

9 इन्द्रियों के आधार पर वर्गीकरण

1 नेत्रों को आनन्द देने वाली अर्थात दृश्य कलाएं चित्रकला मूर्तिकला वास्तुकला।

2 कानों को आनन्द देने वाली अर्थात श्रव्य कलाएं संगीत कला काव्य कला

3 नेत्र और कान दोनों को आनन्द देने वाली कलाएं संगीतकला नृत्यकला और नाट्यकला।

10 कला की अध्यात्मिक पृष्ठभूमि

कला के अध्यात्मिक स्वरूप पर विचार करने वाले मनीषियों ने कला को महामाया का चिन्मय विलास कहा है प्राचीन शैव सिद्वान्तों में कला का प्रयोग भाषा के कंचुक के रूप मे हुआ है। कल शिव के रूप में अनन्त नाद में मूर्त भाव प्रकाशित करने वाली मानसी शक्ति है कला का अन्तिम लक्ष्य केवल आनन्द या इसकी प्राप्ति ही नहीं बल्कि परमानन्द द्वारा ब्रहा रस का अनुभव कराना है अतः जो कला परमतत्व की ओर ले जाए वही सच्ची कला है भारतीय संस्कृति में कला को कलात्मक विनोद न मान कर परम तत्व के साक्षात्कार का साधन माना गया है ललित कलाओं का आध्यात्मिक इतिहास पूर्णत वेद तथा पुराणों से सम्बन्धित है ललित कला प्रकृति में विद्यमान

है पाश्चात्य कलाकार स्थूल के आधार पर सुक्ष्य का खोज करते है वही भारतीय विचार धारा सुक्ष्म की तह में जाकर स्थूल की तरह आती है ललित कलाओं को भारतीय दृष्टिकोण से जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष एवं मुक्ति का मार्ग माना गया है।

धर्म का कलात्मक सौन्दर्य पवित्र होता है धर्म के साथ कलाएं विशेषकर लोक कलाओं एवं लोक गीतों को वैभव प्रदान किया अजन्ता अलौरा की गुफाएं भी कला और धर्म के प्रतीक है अनादि काल से नृत्य संगीत तथा अन्य कलाओं का धर्म के साथ गहरा सम्बन्ध रहा है कला गर्मज्ञों और दार्षनिकों के अनुसार किसी कलाकृति के मूल्यांकन आधार कलाकृति के रचनागत वैशिष्टय के अवलोकन के साथ साथ उसके सौन्दर्य तत्वों का ज्ञान और उसका समग्र प्रभाव होना चाहिए। विभिन्न कलाओं का उददेष्य आनन्द और संतोष आत्म शक्ति ही माना जाता है। विभिन्न कलाओं का आध्यात्मिक इतिहास पूर्णतः वेद तथा पुराणों से सम्बन्धित है कलाएं एक ऐसी ललित तथा अनुठी रचना है जो प्रकृति में पहले से विद्यमान है विभिन्न कलाओं को भारतीय दृष्टिकोण से जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को बौद्विक एवं मुक्ति का मार्ग माना गया है। भारतीय संस्कारों के अनुसार कलाओं का उदेदष्य उपयोग एवं कार्य है ऐसा प्रतीत होता है कि मानव के मस्तिष्क और चेतना में इन कलाओं में कोई ऐसी चीज है जो बिल्कुल एक न होते ह्वए भी मूलतः एक दूसरे से मिलती जुलती है अतैव कला मे निहित मौलिक बौद्विक भावनात्मक एवं सौन्दर्यपरक मूल्यों की रचना कला तत्वों पर ही आधारित है। धर्म तथा संगीत की सरिताएं अनेक उतार चढाव के बावजूद गंगा यमुना की तरह निरंतर बहती चली आ रही है ये सभी मानव के दृष्टिकोण को व्यापक बनाते है यद्यपि धर्म और कलाओं में पर्याप्त विविधता पाई जाती है तब भी भारतीय संस्कृति को आधार माना जाए तो प्रेम मित्रता एकता तथा ब्रहा ज्ञान का संदेश सम्पूर्ण विश्व में फैलाती है।

अन्त में यह कहना उचित होगा कि संगीत का परिपाक एवं अभ्युन्नति सदैव दार्शनिक एवं आध्यात्मिक तत्वों से हुई है जिसका प्रतिफलन प्राचीन काल से मध्य काल तक और मध्य काल से आधुनिक काल तक संस्कारें में देखा जा सकता है।

संगीत को आनन्द का अविर्भाव माना जाता है ईश्वर का साक्षात ईश्वर का स्वरूप है कलाओं का अन्तिम उदेदष्य मोक्ष प्राप्ति है जो की मानव को समस्त चिन्ताओं एवं दुखों से दूर करता है धर्म ने कला को और कला को धर्म ने अधिक से अधिक जन मानव तक पहुचाया है सभी धर्मो ने संगीत का मुक्त रूप से प्रयोग किया है। भारत का इतिहास साक्षी है कि संगीत ने धर्म और अध्यात्म का मार्ग अपनाकर सामाजिक कुरितियों और बाधाओं को दूर किया है व लोकप्रियता प्राप्त की है।

11 सहायक ग्रन्थ सूची

1 "भारतीय संगीत का इतिहास"
(आध्यात्मिक एवं दार्शनिक)
डॉ0 सुनीता शर्मा
पृ – 141–167
संजय प्रकाशन – दिल्ली 110053

2 "कला में संगीत, साहित्य और उदात के तत्व"
डॉ0 हरद्वारीलाल शर्मा

पृ0 – 21 – 22

निबंध संगीत – सं – लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाधरस (उत्तर प्रदेश) 1978

3 सितार मलिका – भगवतशरण शर्मा
पृ0 संख्या – 22
संगीत शास्त्र – जगदीश सहाय कुलश्रेष्ठ
पृ0 संख्या – 10–11

4 संगीत निबन्धावली – डॉ0 लक्ष्मीनारायण गर्ग
पृ0 संख्या – 10